CIPHET PAU LUDHIANA में ASEAN के दस दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन

Posted by: Bureau Zeet Samachar December 5, 2024 Comments Off 60 Views

लुधियाना, (सुनील गोयल)"फलों, सब्जियों और बाजरा की कटाई के बाद की प्रौद्योगिकी पर क्षमता निर्माण" शीर्षक से दस दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आज आईसीएआर-सिफेट, लुधियाना में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। 26 नवंबर, 2024 को उद्घाटन किए गए कार्यक्रम में ब्रुनेई दारुस्सलाम, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस और थाईलैंड सहित आसियान सदस्य देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

यह पहल, भारत सरकार और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास है, जिसका उद्देश्य फसल कटाई के बाद की प्रौद्योगिकियों में कृषि पेशेवरों की क्षमता को बढ़ाना है। प्रतिभागियों, जिन्होंने अपने-अपने देशों के कृषि मंत्रालयों के तहत विभिन्न विभागों का प्रतिनिधित्व किया, ने सैद्धांतिक, प्रदर्शन और औद्योगिक यात्रा सत्रों के माध्यम से गहन ज्ञान और कौशल प्राप्त किया।

आईसीएआर-सिफ़ेट, लुधियाना के निदेशक डॉ. नचिकेत कोतवालीवाले ने आसियान प्रशिक्षण कार्यक्रम के 10 दिनों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम के सत्र, क्षेत्र के विशेषज्ञों के नेतृत्व में, नुकसान को कम करने और कृषि उपज में मूल्य जोड़ने के लिए फसल कटाई के बाद की प्रौद्योगिकी में नवाचारों और सर्वोत्तम प्रथाओं पर केंद्रित थे। उन्होंने प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण, उपयुक्त मशीनों के व्यापार, विस्तार पदाधिकारियों के प्रशिक्षण और उत्पाद मानकों के विकास में आसियान सदस्य देशों और भारत के बीच सहयोग का आह्वान किया।

समापन सत्र के दौरान, प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की प्रासंगिकता और पूरे आसियान क्षेत्र में कृषि कटाई के बाद के प्रबंधन में मजबूत सहयोग को बढ़ावा देने की क्षमता पर प्रकाश डालते हुए अपनी प्रतिक्रिया साझा की। डॉ. परवेन्दर श्योराण, निदेशक, अटारी-जोन-I ने भारत में कृषि विस्तार नेटवर्क के बारे में बताया। डॉ. एस बी सिंह, पीएस, आईसीएआर-आईआईएमआर, लुधियाना ने अपने संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों के बारे में बताया।

मुख्य अतिथि, डॉ. के. अलगुसुंदरम, पूर्व-डीडीजी (कृषि इंजीनियरिंग और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन), आईसीएआर ने कृषि में आम चुनौतियों के समाधान में ज्ञान-साझाकरण और वैश्विक भागीदारी के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कृषि अवशेषों से उच्च मूल्य वाले यौगिकों के निष्कर्षण से अधिक मूल्य मिलता है और उन्होंने उच्च मूल्य वाले औद्योगिक उत्पादों में प्रसंस्करण के लिए अपने संबंधित देशों के विशेष बागवानी उत्पादों पर ध्यान देने की सलाह दी।

इस कार्यक्रम की कृषि अनुसंधान और विकास में भारत और आसियान देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक कदम के रूप में प्रशंसा की गई।

ICAR – CIPHET PAU LUDHIANA ने 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण के लिए आसियान प्रतिनिधियों का स्वागत किया

Posted by: Bureau Zeet Samachar November 27, 2024 Comments Off 43 Views

लुधियाना (सुनील गोयल)"फलों, सब्जियों और बाजरा की कटाई के बाद की प्रौद्योगिकी पर क्षमता निर्माण" नामक दस दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 26 नवंबर 2024 को आईसीएआर सिफेट लुधियाना में किया गया। यह कार्यक्रम 26 नवंबर से 5 दिसंबर 2024 तक ब्रुनेई दारुस्सलाम, म्यांमार, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, फिलीपींस और थाईलैंड सहित आसियान सदस्य देशों के 16 अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह पहल भारत सरकार और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) के बीच एक सहयोग है। प्रतिभागी अपने-अपने देशों के कृषि मंत्रालयों के अंतर्गत विभिन्न विभागों का प्रतिनिधित्व करते हैं। निदेशक आईसीएआर सिफेट लुधियाना ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया और आसियान प्रशिक्षण कार्यक्रम का अवलोकन दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य मूल्य संवर्धन और खाद्य सुरक्षा के लिए कटाई के बाद की प्रौद्योगिकी और मशीनीकरण समाधानों पर क्षेत्रीय सहयोग और ज्ञान साझा करना है। फलों, सब्जियों और बाजरा पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, कार्यक्रम उत्पाद की शेल्फ लाइफ और गुणवत्ता में सुधार, फसल के बाद के नुकसान को कम करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ प्रथाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान, व्यावहारिक, प्रदर्शन दौरे (चंडीगढ़, अबोहर), प्रयोगशालाएं और स्थानीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (लुधियाना) शामिल हैं। ये आसियान देश विविध कृषि-जलवायु स्थितियों का प्रदर्शन करते हैं जो विभिन्न प्रकार के फलों, सब्जियों और बाजरा के उत्पादन को सक्षम करते हैं। ये फसलें न केवल क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा में योगदान देती हैं बल्कि लाखों छोटे किसानों को आय का स्रोत भी प्रदान करेंगी।